MIDNAPORE COLLEGE
DEPARTMENT OF HINDI (UG)
SEM- 2 PAPER – HINC 201
TOPIC – महादेवी वर्मा (मैं नीर भरी दुःख की बदली)

"मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहात विश्व हंसा.
नयनों में दीपक - से जलते
पलकों में निर्झरणी मचली !

प्रसंग :

यह गीत एक बदली पर आधारित है | प्रथम पंक्ति में वदली अपना स्वयं परिचय दे देती है- "मैं नीर भरी दुःख की बदली," इसमें यह "मैं" कौन है? "मैं" को समझ लेने के बाद कविता समझना सरल हो जाएगा| प्रथम तो स्पष्ट हैं की "बदली" अपना परिचय दे रही है तो बदली ही "मैं" है| वह "नीर भरी" है क्योंकि वाही जल बरसाती है वाक्य का स्त्रीलिंग में होना और बदली के साथ "दुःख की" पद यह संकेत भी देती है कि "मैं" स्वयं कवयित्री के लिए या वेदना ग्रस्त नारी के लिए भी हो सकता है| इस प्रकार पूरी कविता के अर्थ दो समानांतर स्तरों पर लगाया जा सकता है| पहला – जलपूर्ण उमड़ते – घुमड़ते और दूसरा –दुःख और वेदना ग्रस्त नारी ,जो स्वयं कवयित्री भी हो सकती है|

व्याख्या: पहले 'बदली' के पक्ष में देखे , उसकी हर गर्जना के पीछे , हलचल के पीछे भी स्थिरता बसी है | मानों कोई है जिस पर इस क्रंदन (चीख) का कोई प्रभाव नहीं होता , वह निस्पंद (स्थिर) रहता है| जबकि उस गर्जना पर विश्व प्रसन्न होता है क्योंकि वह भीषण गर्मी से आहत है ,दुखी है ,इसलिए बादलों की हलचल और गर्जन उसे प्रसन्न कर जाती है| बादलों में बसी बिजली की कौंध दीपकों – सी प्रतीक होती है , और उनमें स्थिर जल नदी की भांति प्रवाहित होने को आतुर है |

दूसरी ओर विरहिणी के पक्ष में भाव होगा , उसके स्पंदन में चिर निस्पंदन बसा है ,जो हमेशा से स्पंदन रहित है | मेघ (बादलों) की गर्जना में पीड़ित और चोट खाए हुए संसार के लोगों की पीड़ा ही अभिव्यक्त हो रही है | ऐसा प्रतीत होता है कि यह गर्जन किसी की पीड़ा के स्तर नहीं,बल्कि कोई जोर –जोर से हँस रहा हो ,परन्तु यह किसी एक प्रेमी का क्रंदन है|

विरहिणी की आँखों में दीपक में जलते रहते है|ये दीपक विरहाग्नि के भी हो सकते है और आशा के भी | आँसू उसकी पलकों से नदी के समान बहने को आतुर है ,वह अपनी विरह – वेदना को आँसूओं के रूप में प्रवाहित करना चाहती है; ठीक वैसे ही ,जैसे बदली जल बूंदों को | भाव स्पष्ट है की कवयित्री कहना चाहती है कि जिस प्रकार बदली पानी से भरी रहती है ,उसी प्रकार मेरी आँखे भी आश्रुपूर्ण रहती है |